दृष्टि The Vision

drishti

सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: Shubham Thakur

Mobile Number: ____________________

Medium (English/Hindi): ____________________

Email: ____________________

Center & Date: ____________________

UPSC Roll No.: ____________________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्ता द्वारा भरा जाए *(To be filled by Evaluator only)*

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

④ खण्ड 'अ'

1. प्रगतिशील समाज परंपराओं को पछाड़ देते हैं जैसे बच्चे अपने पुराने कपड़ों को छोड़ देते हैं।

“विद्यालय की एक कक्षा में जहाँ अधिकांश बच्चे टाट (चटाई) पर बैठे हुए थे, वहीं दूसरी ओर कुछ बच्चों के लिए जमीन पर अलग बैठने की व्यवस्था थी। इनमें से जब एक बच्चे को जब बैठने की इस अलग व्यवस्था, पीने के पानी के लिए अलग घड़ा जैसी चीजें समझ से बाहर लगीं, तब उसने इस व्यवस्था पर प्रश्न उठाना प्रारंभ किया। उसने प्रश्न उठाया समाज की उन परंपराओं को पर जिन्होंने समाज को छूत-अछूत में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

बाँटकर समाज की प्रगतिशीलता पर प्रश्न चिन्ह लगाया।"

यह प्रकरण है भारतीय संविधान में के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले "बाबासाहब डॉ. भीमराव आम्बेडकर" का, जिन्होंने समाज की रूढ़ियों और अनावश्यक परंपराओं पर सवाल उठाकर समाज को बदलाव के लिए प्रेरित किया।

समाज में बदलाव की इस प्रक्रिया से पूर्व यह जानना जरूरी है कि समाज में इन परंपराओं का निर्माण क्यों व कैसे होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दरअसल समाज में व्यक्ति विभिन्न प्रकार की भूमिका अदा करता है, जिनमें सामाजिक ताने-बाने को बनाए रखने के लिए समाज कुछ नियमों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए सम्पत्ति के उत्तराधिकार को सुनिश्चित करने के लिए जहाँ एक ओर विवाह नामक संस्था का विकास हुआ, वहीं दूसरी ओर लड़की के विवाह उपरांत दूसरे घर जाने से सम्पत्ति का बँटवारा पुत्रों में किया जाने लगा। इस तरह धीरे-धीरे लड़कियों को 'पराया धन' मानने की परंपरा प्रारंभ हुयी।

लेकिन एक प्रगतिशील समाज

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में यह जरूरी होता है कि समय-समय पर वह इन परंपराओं में बदलाव करता रहे, अन्यथा ये परंपराएं रूढ़ियों में बदल कर समाज में अन्याय तथा शोषण का भी कारण बन सकती हैं। जैसे- ऋग्वैदिक काल में श्रम विभाजन तथा श्रम उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था लायी गयी, जिसमें सामाजिक गतिशीलता पर रोक न थी। ऋग्वेद में एक व्यक्ति इसका उल्लेख भी करता है कि, "मैं कवि हूं, मेरे पिता चिकित्सक हैं तथा मेरी माँ अनाज पीसती है"

परन्तु धीरे-धीरे इस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व्यवस्था में जटिलताएं आने लगीं। बच्चों को पिता का कर्म ही स्वीकार करना होगा, ऐसी परंपराओं ने उत्तरवैदिक कालीन समाज की प्रगतिशीलता पर प्रश्न चिन्ह लगाया।

इसी प्रकार सती प्रथा के संदर्भ में भी परंपराओं का शोषण मूलक पक्ष भी उजागर हुआ। हालाँकि ऐसा नहीं है कि ये विषमता केवल भारत में रहीं, बल्कि विश्व इतिहास में ऐसी कई परंपराओं को सामाजिक प्रगतिशीलता में बाधक के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ यूरोपीय समाज में धर्म और धार्मिक गुरुओं की महत्ता अंत में सामाजिक विभाजन व शोषण के रूप में सामने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आयीं।

इस तरह मानवीय इतिहास में कई परंपराऐं, रूढ़ियों में बदली, लेकिन प्रगतिशील समाजों ने इन शोषण मूलक परंपराओं को उसी तरह बदला जैसे बच्चे पुराने कपड़ों को बदल देते हैं। दरअसल परिवर्तन संसार का साश्वत नियम है। भारतीय बौद्ध धर्म में क्षणिकवाद इस संदर्भ में उपयुक्त नजर आता है जो बताता है कि संसार की प्रत्येक वस्तु नाश्वान है। ऐसे ही किसी भी समाज द्वारा ऐसी परंपराओं का निर्माण असंभव है जो सभी कालों में प्रासंगिक हो।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

3.

इस तरह जहाँ एक ओर समाज परंपराओं का निर्माण करता है, वहीं दूसरी ओर उनमें बदलाव कर अपनी प्रगतिशीलता का उदाहरण भी देता है। यह बदलाव विभिन्न कारणों का संयोग होता है, जिसमें बदलती आवश्यकता, शोषण मूलक प्रवृत्ति, प्रगतिशील विचार व बौद्धिक आदि प्रासंगिक भूमिका अदा करते हैं।

उदाहरण के लिए मध्यकालीन फ्रांस में परंपराओं के शोषण मूलक स्वरूप के कारण बूर्बो वंश की निरंकुशता, पादरियों व कुलीनों का शोषण व महिला असमानता में वृद्धि

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हुयी। लेकिन रूसो, वाल्टेयर जैसे बुद्धिजीवियों ने असमानता व शोषण आधारित समाज की परंपराओं पर प्रश्न चिन्ह लगाया तथा समाज को बदलाव के लिए प्रेरित किया। समाज ने भी इन बदलावों को स्वीकार कर अपनी प्रगतिशीलता का उदाहरण दिया।

वर्तमान समय में भी ऐसे उदाहरण देखे जा सकते हैं जहाँ समाज ने परंपराओं को बदला है जैसे- यूरोप में एल॰ जी॰ बी॰ टी॰ क्यू॰ अधिकारों की मान्यता, भारत में सबरीमाला मंदिर में महिला प्रवेश,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तीन तलाक पर प्रतिबंध आदि। ये ऐसे उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि समाज में परिवर्तन ही समाज की प्रगतिशीलता को बनाए रखता है, अन्यथा "रुका हुआ जल भी खराब हो जाता है"

हालाँकि यहाँ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ये परंपराएं तभी बदली जाती हैं जब ये समाज की आवश्यकताओं व सोच के विरोधी हों, जैसे - भारतीय समाज में सती प्रथा को रोका गया। किन्तु समाज में कई परंपराएं अभी भी आदि काल से लगातार चली आ रही हैं। जैसे- भारतीय संस्कृति में प्रकृति पूजा,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

4.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

बुजुर्गों का सम्मान, गाय को पहली रोटी देना (पशुओं को भी महत्व) आदि। वस्तुत: ये परंपराऐं सकारात्मक भूमिका लिए होने के कारण आज भी ज्यों की त्यों बनी हुयी हैं।

सार रूप में यही कहा जा सकता है कि अपने पूर्वजों की विरासत को सहेज कर रखना जिस तरह प्रगतिशीलता को दर्शाता है उसी तरह पूर्वजों से प्राप्त परंपराओं में समयानुसार बदलाव भी प्रगतिशीलता को दर्शाता है। वस्तुत: "जहाँ, परंपराओं के नाम पर शोषण मूलक व्यवस्था का समर्थन प्रगतिशील

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

समाज पर प्रश्न चिन्ह है, वहीं दूसरी ओर प्रगतिशीलता के नाम पर आँख मूँदकर हर परंपरा का विरोध करना भी मूर्खता होगी।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड 'ब'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(2)

बुद्धिमान व्यक्ति इस या उस राज्य का नागरिक नहीं बल्कि दुनिया का नागरिक होता है।

" एक राज्य के पड़ोसी राज्य में अकाल पड़ा था, जिसके कारण वहाँ महामारी जैसी समस्या भी उत्पन्न होने लगी थी। ऐसे में जब राजा नें पड़ोसी राज्य को अनाज सहायता पहुँचाने की बात कही, तब उसके सहयोगियों में से एक नें ऐसा न करने की सलाह दी तथा अपनी प्रजा के लिए अनाज सुरक्षित रखने और दूसरे ~~र~~ राज्य पर समय आने पर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

5.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कब्जा करने को कहा। परन्तु राजा नें सलाह को दरकिनार करते हुए राज्य की सहायता की और कहा कि मानव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मानवीय सहयोग को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता।"

इस तरह उस राजा ने न केवल पड़ोसी राज्य से मित्रतापूर्ण संबंध बनाए बल्कि उस राज्य की महामारी के प्रसार को स्वयं के राज्य में आने से भी रोका। ये प्रकरण राजा की बुद्धिमत्ता को दर्शाता है जो सभी के कल्याण को महत्व देता है।

दरअसल बुद्धिमान व्यक्ति सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बात करते हैं, इन्हे किसी राज्य की सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। ऐसे व्यक्ति स्वार्थ की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानवीय कल्याण की बात करते हैं। राष्ट्रवाद की चरम भावना से दूर ये व्यक्ति विश्व बंधुत्व के पक्षधर होते हैं। इनकी प्रगतिशीलता इसी बात में निहित होती है कि ये व्यक्ति भारतीय संस्कृति के मौलिक लक्षण "वसुधैव कुटुम्बकम्" को मानते हैं।

ऐसे लोगो की सोच को उत्कृष्ट कहने के पीछे भी कई कारण विद्मान हैं। दरअसल ऐसे लोग इस बात को जानते हैं कि

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

"सभी के हित में व्यक्ति का हित छिपा होता है।" जैसे यूनाइटेट नेशन के महासचिव ने एक बार कहा था कि "विश्व में कहीं भी गरीबी हर जगह के लिए समस्या है।"

बुद्धिमान लोग उपर्युक्त तथ्य को भली-भाँति समझते हैं कि विश्व में शाँति, समता सभी के हितो की पोषक है। इसी तरह स्वयं को राष्ट्र की सीमाओं से परे करना, अवसरों की उपलब्धता बढ़ाता है।

आधुनिक समय में पूँजीवादी व्यवस्था इसी बात पर आधारित है जिसमें राष्ट्र की सीमाओं को व्यापार हेतु खोलकर "वैश्विक ग्राम" की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

6.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अवधारणा को शामिल करना साकार करना शामिल है। दरअसल ये व्यापारिक सहयोग, आपसी सहयोग का ही एक हिस्सा है, जिसमें सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने का भाव निहित है।

इसी बात के साथ यह भी ध्यान देना चाहिए कि बुद्धिमान लोग स्वयँ को राज्य की सीमाओं में क्यों नहीं बाँधते। दरअसल राज्य की सीमाएँ संकीर्णता की निशानी हैं।

यह संकीर्णता हितों में टकराव को उत्पन्न करती है। जैसे- हिटलर नें जर्मन रक्त की शुद्धता के आधार पर जर्मन लोगों को राज्य की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सीमा में बाँध दिया। जिसका परिणाम उग्र राष्ट्रवाद व द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में निकला।

वर्तमान में भी राष्ट्रों के मध्य इसी प्रकार का वैमनस्य देखने को मिलता है। जिसमें पाकिस्तान के कुछ तानाशाही लोग स्वयँ को राष्ट्र से बांधकर भारत के प्रति राज्य प्रायोजित आतंकवाद को आश्रय देते हैं। इसका परिणाम न केवल पाकिस्तान पर पड़ता है, बल्कि भारत की शाँति व सुरक्षा भी प्रभावित होती है। दोनो राज्यों का सुरक्षा व्यय बढ़ता है तथा तीसरे पक्षों द्वारा इसका लाभ उठाया जाता है।

ऐसी परिस्थितियाँ बुद्धिमत्ता-

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पूर्ण नहीं कही जा सकती क्योंकि बुद्धिमत्ता ~~ह~~ तो दोनो राष्ट्रों के आपसी सहयोग से विकास में निहित है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दरअसल स्वयं की सीमाओं में बाँधना मूर्खता की निशानी है। रूसो ने भी मानव की स्वतंत्रता पर बल दिया है। इसी तरह वाल्टेयर ने भी मानव को जन्म से स्वतंत्र माना है किन्तु विकास के क्रम में विभिन्न बन्धनों में जकड़ा हुआ भी कहा।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि बुद्धिशील विचारक स्वतंत्रता के पक्षधर है। मानव को सीमाओं में बाँधना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7. उसकी क्षमताओं पर अंकुश लगाने के समान है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हालाँकि इतिहास में कई ऐसे उदाहरण रहे हैं जिन्होने अपने कृत्यों से राज्य की सीमाओं को सीमित किया। वस्तुतः महात्मा गाँधी, मदर टेरेसा, विवेकानंद, नेल्सन मंडेला जैसे विचारकों ने अपने विचारों से राज्यों की सीमाओं को लांघकर विश्व कल्याण पर बल दिया।

दरअसल ये विचारक ~~इस बात~~ बुद्धिमत्ता तथा सहयोग का लाभ व संकीर्णता की हानि से भली-भाँति परिचित थे। इसी कारण गाँधीजी ने भी भारत के दो राष्ट्रों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विभाजन का विरोध किया। किन्तु संकीर्ण सोच व साम्प्रदायिकता का दंश इतना गहरा था कि वे इस प्रयास में सफल न हो सके।

उपर्युक्त के माध्यम से बुद्धिमत्तापूर्ण सोच का लाभ स्पष्टतया बताया जा सकता है। दरअसल ऐसी सोच समाज में परिवर्तन का साधन बनती है। यह सोच "सर्वोदय" पर आधारित होती है। उदाहरण के लिए कोविड के दौरान भारत द्वारा अपने पड़ोसी देशों को कोविड वैक्सीन की आपूर्ति की गई जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुख भाग भवेत्।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को प्रदर्शित करती है।

सार रूप में मानव इस संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी इसलिए है कि वह आपसी सहयोग का महत्व समझता है। यह आपसी सहयोग विश्व को एक ऐसे समाज में बदलने की क्षमता रखता है जिसे देखकर आसानी से कहा जा सके-

"यदि स्वर्ग कहीं है, तो यहीं है, यहीं है यहीं है।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation